अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, आगरा

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड का द्विवार्षिक अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन दिनांक 03-04 दिसंबर 2015 को आगरा में आयोजित किया गया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में संयुक्त सचिव-राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, सुश्री पूनम जुनेजा विशेष रूप से उपस्थित थीं। साथ ही पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री डी. एस. रावत, उप निदेशक-कार्यान्वयन (उत्तर क्षेत्र) श्री के. पी. शर्मा एवं सचिव-टॉलिक, आगरा, श्री आर. एस. तिवारी उपस्थित थे। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक-क्रय श्री रवि दत्त गौड़, मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक-आगरा रिटेल, श्री सिद्धार्थ मिश्रा, प्रमुख-राजभाषा, श्री राम विचार यादव, वरिष्ठ प्रबन्धक-निगम एवं जनसम्पर्क विभाग श्रीमती वासंती वैद्य सहित प्रधान कार्यालय, अंचलों, रिफाइनरियों तथा दिल्ली समन्वय कार्यालय के राजभाषा अधिकारी, कर्मचारी तथा श्रेष्ठ समन्वयकों सहित कुल 51 लोग उपस्थित थे।

सम्मेलन का शुभारंभ एचपी गान एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, आगरा रिटेल क्षेत्रीय कार्यालय श्री सिद्धार्थ मिश्रा ने प्रेम के उच्चतम सोपान का प्रतीक, अलौकिक और अद्भूत शब्द को सार्थक करने वाला ताजमहल और इसकी नगरी आगरा में सभी का हार्दिक स्वागत किया। अपने स्वागत सम्बोधन में श्री मिश्रा ने सभी को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि कार्यक्रम की सफलता सक्रिय सहभागिता से ही संभव है। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रति हमारी मानसिकता को बदलना होगा, तभी एक परिवर्तन आएगा। तदुपरान्त, उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने अपना स्व-परिचय दिया।

प्रमुख-राजभाषा कार्यान्वयन, श्री राम विचार यादव ने कहा कि आज हमारे बीच संयुक्त सचिव, भारत सरकार, श्रीमती पूनम जुनेजा महोदया भारत सरकार की ओर से स्वयं उपस्थित हैं, इसलिए आज का दिन अत्यंत अहम है। सम्मेलन की पृष्ठभूमि के बारे में उन्होंने सभी को अवगत कराया। उन्होंने कोलकाता सम्मेलन का उल्लेख करते हुए कहा कि उस सम्मेलन में निदेशक-मानव संसाधन ने सम्मेलन को चर्चा उन्मुख

बनाने का निर्देश दिया था। उसी दिशा में अग्रसर होकर इस सम्मेलन में हम समूह चर्चा करेंगे और निष्कर्ष उच्च प्रबंधन के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। प्रमुख-राजभाषा ने मंचासीन अतिथियों को बताया कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में हम राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के कार्यान्वयन पर चर्चा करेंगे एवं संभावित कठिनाइयों के निराकरण हेतु प्रयास करेंगे। वर्ष 2015 के दौरान, देश भर में प्रधान कार्यालय, अंचल, रिफाइनरी स्तर पर आयोजित राजभाषा सम्मेलनों का संक्षिप्त संकलन का विमोचन माननीया संयुक्त सचिव, सुश्री पूनम जुनेजा के करकमलों से किया गया।

उप महाप्रबंधक-क्रय, श्री रविदत्त गौड़ ने सुंदर उदाहरणों के माध्यम से भाषा के स्वरूप का विश्लेषण किया। उन्होंने भाषा के तीन स्वरूप का उल्लेख किया, जिसमें प्रथम स्वरूप है, मां-सहज, सुंदर एवं सबसे निकट। द्वितीय स्वरूप है, देवी-असुरों पर सुरों की विजय, अर्थात नियमों का पालन, सत्य की जय। तृतीय नदी का स्वरूप-स्वत: प्रवाहमान परंतु उदगम स्थिर। अर्थात भाषा परिवर्तनशील हो परंतु हम अपनी जड़ को न भूलें।

उप निदेशक राजभाषा कार्यान्वयन (उत्तर क्षेत्र) श्री के. पी. शर्मा ने कहा कि मातृभाषा का विकास बिना उन्नति संभव नहीं है। उन्होंने विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि किसी भी विकसित राष्ट्र के लिए मातृभाषा का विकास आवश्यक है। नकारात्मक सोच से हमें घबराना नहीं है और प्रवाह के विपरीत दिशा में जाकर हमें परिवर्तन लाना है।

आगरा नराकास के सचिव श्री आर. एस. तिवारी ने नराकास आगरा की ओर से सभी का हार्दिक स्वागत किया तथा आगरा नराकास की विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख किया। उन्होंने एचपीसीएल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

संयुक्त निदेशक-(राजभाषा), पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय श्री डी. एस. रावत ने एचपीसीएल के उच्च प्रबंधन की प्रशंसा करते हुए कहा कि पेट्रोलियम मंत्रालय के अधीन कुल 18 संगठन है और राजभाषा में सर्वोत्तम काम एचपीसीएल में हो रहा है। उन्होंने कहा कि वे स्वयं विभिन्न निरीक्षणों के माध्यम से वास्तविक स्थिति से परिचित है। उन्होंने मंत्रालय द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का उल्लेख किया जिसमें कार्यालयों को अधिसूचित करने के लिए कहा गया था। उन्होंने एचपीसीएल द्वारा एक साथ 102 कार्यालयों को अधिसूचित करवाए जाने की बात को ऐतिहासिक बताते हुए एचपीसीएल की प्रशंसा की। उन्होंने प्रमुख-राजभाषा को एचपीसीएल के 102 कार्यालयों की अधिसूचना की प्रति सौंपी। उन्होंने कहा कि पुरस्कार एवं प्रशंसा हमें प्रेरण प्रदान करती है तथा इससे संतोष न होकर हमें निरंतर प्रगति करना है।

संयुक्त सचिव, राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, सुश्री पूनम जुनेजा ने राजभाषा कार्यान्वयन में एचपीसीएल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के नियमित आयोजन से राजभाषा से जुड़े कार्मिकों के मनोवल में वृद्धि होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी को सरलतम रूप में अपनाकर कार्य करना होगा। हिन्दी तथा आंचलिक भाषा का प्रयोग और अधिक करना होगा। कार्यालय में

कार्यरत सभी कर्मचारियों को राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों के बारे में पता होना चाहिए। कार्यालय प्रमुखों को स्वयं हिन्दी में ज्यादा से ज्यादा काम करना चाहिए। उन्होंने राजभाषा अधिकारियों को सूचना प्रणाली के प्रयोग तथा उसके उपयोग तथा स्वयं को और अद्यतित होने का अनुरोध किया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त के करीब एचपीसीएल के हिन्दी विभाग के दो पूर्व विभाग प्रमुख, श्री रवि दत्त गौड़ तथा श्रीमती वासंती वैद्य को सुश्री पूनम जुनेजा ने अपने करकमलों से शॉल/पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया। सम्मेलन के मेजबान उत्तर मध्य अंचल के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सिंह ने उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन किया। उद्घाटन सत्र का संचालन उप प्रबंधक-राजभाषा कार्यान्वयन, दिल्ली समन्वय कार्यालय, डॉ. ईश्वर सिंह द्वारा किया गया।

तदुपरांत मंचासीन की उपस्थिति में प्रमुख-राजभाषा कार्यान्वयन, श्री रामविचार यादव ने **एचपीसीएल में राजभाषा के बढ़ते कदम** विषय पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने एचपीसीएल द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में किए जा रहे प्रयासों के बारे में सभी को अवगत कराया। संयुक्त निदेशक-राजभाषा सुश्री पूनम जुनेजा प्रस्तुतीकरण से प्रभावित होकर राजभाषा कार्यान्वयन में एचपीसीएल के प्रयासों की अत्यंत प्रशंसा की।

दूसरे सत्र में लाइफ स्किल डायनामिक्स के फाउंडर तथा फैकल्टी श्री दीपक राघव ने उपस्थित प्रतिभागियों को अभिप्रेरणा विषय पर ज्ञानवर्धन व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि हमें आत्म निरीक्षण के माध्यम से स्वयं को अभिप्रेरित करना होगा। "डू इट नाउ" का मंत्र अपनाते हुए काम में खुद को समर्पित करना है तथा अपनी कमजोरियों को अपनी शक्तियों में बदलना है। परिवर्तन को स्वीकार कर सफलता की ओर अग्रसर होना है और अपने जीवन में संतुलन को बनाए रखना है।

सम्मेलन के दूसरे दिन के उप महाप्रबंधक-क्रय, श्री रवि दत्त गौड़ ने टीम भावना पर बहुत ही रोचक एवं सुंदर तरीके से समूह गतिविधियां की, जिसमें प्रतिभागियों को चार समूह में बांटा गया था और धनवान, बलवान, ज्ञानवान, बेईमान जैसे किरदार दिए गए थे। इन गतिविधियों में समूह कार्यकलाप, अभिनय के माध्यम से टीम भावना, लक्ष्य निर्धारण, उत्पादकता, विपणन तथा अनुशासन आदि को सहज सरल रूप से उदाहरण के माध्यम से बताया गया। सत्र के अंत में उन्होंने सभी प्रतिभागियों को एक दूसरे से मिलकर, फूल देकर आपसी आत्मीय रिश्तों को सशक्त करने की दिशा में अविस्मरणीय अभ्यास करवाया।

दूसरे दिन के दूसरे सत्र में पहले से सूचित निम्न चार विषयों पर चार समूहों में चर्चा की गई।

1. अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन
2. श्रमशक्ति आयोजना
3. राजभाषा गौरव पुरस्कार
4. सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी

सम्मेलन में समूह चर्चा के लिए निर्धारित 4 समूहों द्वारा दिए गए 6-6 सुझावों का चयन किया गया जिसे मॉडरेटर्स की टीम द्वारा समीक्षा उपरांत प्रमुख-राजभाषा के माध्यम से उच्च प्रबंधन के समक्ष अलग से प्रस्तुत किया जाएगा।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता कार्यकारी निदेशक-मानव संसाधन, श्री राकेश मिस्री द्वारा की गई। उप प्रबंधक-राजभाषा कार्यान्वयन (विपणन), श्री सलीम खान ने दो दिवसीय सम्मेलन के वृतांत को प्रस्तुत करते हुए मुख्य बिंदुओं को रेखांकित किया। श्री राम विचार यादव ने 102 कार्यालयों को अधिसूचित करवाने की जानकारी देते हुए सूची तथा वर्ष 2015 के राजभाषा सम्मेलनों का संकलन उन्हें प्रदान किया। इस 102 कार्यालयों की ऐतिहासिक अधिसूचना में मुख्य भूमिका निभाने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन अधिकारी द्वय श्री अतनु चट्टोपाध्याय तथा श्री सलीम शेख को कार्यकारी निदेशक-मानव संसाधन ने अपने कर कमलों से सम्मानित किया।

कार्यकारी निदेशक-मानव संसाधन के कर कमलों से डॉ. ईश्वर सिंह को उनके काव्य संग्रह 'मेरी धड़कन मेरा चिंतन' के लिए शॉल/पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया। इससे पूर्व प्रमुख-राजभाषा, श्री राम विचार यादव ने 'मेरी धड़कन मेरा चिंतन' की समीक्षा प्रस्तुत की जिसने डॉ ईश्वर सिंह सहित सभी श्रोताओं को द्रवीभूत कर दिया। इसी प्रकार प्रधान कार्यालय, अंचलों एवं रिफाइनरियों से उपस्थित सर्वश्रेष्ठ समन्वयकों को कार्यकारी निदेशक-मानव संसाधन के करकमलों से निदेशक-मानव संसाधन की ओर से जारी प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया।

श्री राकेश मिस्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें 2015 के आगे की रणनीतिक लक्ष्यों को तय करना है। हमें और प्रगति करते हुए राजभाषा का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करना है। भाषा सभ्यता का प्रतीक है, इसलिए हमें अभिनव तरीकों से सोचना होगा कि किस प्रकार सहज, सरल रूप से सभी हिन्दी को अपनाएं। हमें "पुश फैक्टर" नहीं "पुल फैक्टर" चाहिए। लोग नियमों से बंधकर नहीं अपितु खुले हृदय से प्रसन्नता के साथ हिन्दी में काम करें। सूचना प्रणाली के माध्यम से हमें ऐसे ही यूजर फ्रेंडली तकनीकी का विकास करना है, जिससे आसानी से काम हो और समय की बचत हो। हिन्दी को हमारी व्यवसायिक सहयोगी बनाना है, कुछ नई सोच और पहल द्वारा सुनिर्दिष्ट कार्यान्वयन योजना बनानी है।

समापन सत्र के दौरान मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक-आगरा रिटेल श्री सिद्धार्थ मिश्रा भी उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित सभी समन्वयकों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस सम्मेलन से हमें एक दिशा मिली है। राजभाषा कार्यान्वयन को हमने और गहराई से जाना है और इसे हम अपने कार्यस्थल पर कार्यान्वयन करने का पूरा प्रयास करेंगे। सभी प्रतिभागियों की ओर से मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री सिद्धार्थ मिश्रा के प्रति तथा विशेष रूप से वरिष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन अधिकारी-उत्तर मध्य अंचल श्री संतोष सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री विनोद पुनिया तथा अधिकारी-प्रशिक्षु, श्री श्रेय रस्तोगी के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री रिजवान पाशा ने समापन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन-2015 में गृह मंत्रालय तथा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अति विशिष्ट अतिथियों, हमारे कार्यकारी निदेशक-मानव संसाधन तथा दो पूर्व विभागाध्यक्षों की उपस्थिति एवं मार्गदर्शन, समूह चर्चा, अभिप्रेरणा एवं टीम भावना जैसे विषयों पर प्रशिक्षण सत्र के साथ अपने उद्देश्यों में सफल रहा।

संयुक्त सचिव, राजभाषा, भारत सरकार, श्रीमती पूनम जुनेजा प्रतिभागियों के साथ

कार्यकारी निदेशक-मानव संसाधन, श्री राकेश मिस्री प्रतिभागियों के साथ

****